Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 4 | Issue 3 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में फेक न्यूज़ और पत्रकारिता की विश्वसनीयता चुनौतियां और समाधान

Satyavart
Assistant professor
Department of Mass Communication
CRSU JIND

सारांश

इलेक्ट्रॉनिक और डिजिटल समाचार माध्यमों की तीव्र वृद्धि ने सूचना तक पहुँच को व्यापक बनाया है, परंतु इसी प्रक्रिया ने फेक न्यूज़, भ्रामक शीर्षकों, अधूरी सूचनाओं, दृश्य सामग्री के संदर्भ-विहीन प्रयोग और राजनीतिक अथवा व्यावसायिक पक्षपात की समस्या को भी गंभीर बनाया है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के समाचार उपभोक्ताओं के संदर्भ में फेक न्यूज़ से संपर्क, सनसनीखेजता एवं पक्षपात, मीडिया साक्षरता एवं तथ्य-जाँच तथा पत्रकारिता की विश्वसनीयता के बीच संबंधों का विश्लेषण करना है। अध्ययन में दिल्ली, नोएडा, गाज़ियाबाद, गुरुग्राम और फरीदाबाद के 400 उत्तरदाताओं का संरचित प्रश्नावली-आधारित नमूना प्रतिरूप अपनाया गया। पाँच-बिंदु सहमति मापनी से प्राप्त उत्तरों का आवृत्ति वितरण, औसत, मानक विचलन, आंतरिक संगति, सहसंबंध, बहु-प्रतिगमन और अंतःक्रिया विश्लेषण किया गया। परिणामों में फेक न्यूज़ से संपर्क और पत्रकारिता की विश्वसनीयता के बीच महत्वपूर्ण नकारात्मक संबंध पाया गया। सनसनीखेजता एवं पक्षपात का प्रभाव इससे भी अधिक नकारात्मक रहा। मीडिया साक्षरता एवं तथ्य-जाँच का विश्वसनीयता पर सकारात्मक प्रभाव तथा फेक न्यूज़ के नकारात्मक प्रभाव को सीमित करने वाली भूमिका सामने आई। बहु-प्रतिगमन प्रतिरूप ने पत्रकारिता की विश्वसनीयता में 43.2 प्रतिशत परिवर्तन की व्याख्या की। अध्ययन निष्कर्ष देता है कि केवल सामग्री हटाने या चेतावनी लगाने से पर्याप्त सुधार नहीं होगा; संपादकीय पारदर्शिता, स्रोत-प्रकटीकरण, स्वतंत्र तथ्य-जाँच, सुधार नीति, मीडिया साक्षरता, समाचार-विविधता और सार्वजनिक उत्तरदायित्व को एकीकृत करना आवश्यक है।

मुख्य शब्द: फेक न्यूज़, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, पत्रकारिता की विश्वसनीयता, मीडिया साक्षरता, तथ्य-जाँच, सनसनीखेजता, दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र

1. प्रस्तावना

समाचार पत्रकारिता का मूल दायित्व नागरिकों को सत्यापित, संदर्भपूर्ण और सार्वजनिक महत्त्व की सूचना उपलब्ध कराना है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में नागरिक प्रत्यक्ष रूप से अधिकांश घटनाओं का अनुभव नहीं कर सकते; इसलिए वे समाचार संस्थानों पर निर्भर रहते हैं। यह निर्भरता तभी अर्थपूर्ण बनती है जब समाचार-संगठन तथ्यों की जाँच करें, स्रोतों की विश्वसनीयता का मूल्यांकन करें, तथ्य और मत के बीच भेद बनाए रखें तथा त्रुटि होने पर उसे पारदर्शी ढंग से सुधारें। समाचार-माध्यम पर विश्वास समग्र व्यवस्था, विशिष्ट संस्थान, पत्रकार और समाचार-वस्तु के स्तर पर निर्मित होता है (स्ट्रॉम्बैक एवं सहयोगी, 2020)। डिजिटल संचार के विस्तार से सूचना की गति और पहुँच बढ़ी है, परंतु सत्यापन और संपादकीय उत्तरदायित्व की परंपरागत सीमाएँ कमजोर भी हुई हैं। अब समाचार दूरदर्शन, समाचार संकेतस्थलों, वीडियो मंचों, सामाजिक माध्यमों और संदेश अनुप्रयोगों के संयुक्त पारिस्थितिकी तंत्र में प्रसारित होता है (रॉस आर्गुएडस एवं सहयोगी, 2022)।

फेक न्यूज़ केवल पूर्णतः झूठी कहानी तक सीमित नहीं है। इसमें सत्य और असत्य का मिश्रण, संदर्भ से हटाई गई तस्वीर अथवा चलचित्र, भ्रामक शीर्षक, परिवर्तित दृश्य सामग्री, व्यंग्य को वास्तविक सूचना की तरह प्रस्तुत करना, पुराने समाचार को वर्तमान बताना और राजनीतिक अथवा आर्थिक उद्देश्य से तथ्य का चयनात्मक प्रयोग भी सम्मिलित हो सकता है। वसूघी एवं सहयोगियों (2018) ने समाचार के प्रसार का विश्लेषण करते हुए दिखाया कि असत्य सामग्री कई स्थितियों में सत्य समाचार की तुलना में अधिक तेजी और व्यापकता से फैलती है। बाद के शोध ने स्पष्ट किया कि नवीनता, भावनात्मक उत्तेजना, पहचान, परिचित स्रोत और पहले से विद्यमान विश्वास भ्रामक सूचना को स्वीकार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं (पेनीकुक एवं रैंड, 2021; एकर एवं सहयोगी, 2022)।

भारत का समाचार परिवेश भाषाई विविधता, तीव्र राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, व्यापक मोबाइल प्रयोग और सामाजिक संदेश-समूहों की सक्रियता के कारण विशिष्ट है। समाचार संस्थानों की सामग्री और असंगठित उपयोगकर्ता-सामग्री अक्सर एक ही पर्दे पर समान दृश्य रूप में दिखाई देती है। इससे सामान्य उपभोक्ता के लिए संपादित पत्रकारिता, पक्षधर टिप्पणी, प्रचार, मनोरंजन और जानबूझकर निर्मित झूठ के बीच अंतर करना कठिन हो सकता है। मल्होत्रा (2024) के भारतीय पारिवारिक संदेश-समूहों पर अध्ययन ने दिखाया कि युवा सदस्य भ्रामक सामग्री पहचान लेने के बाद भी पारिवारिक विवाद से बचने के लिए उसे सुधारने से हिचकते हैं। इस प्रकार फेक न्यूज़ की समस्या केवल प्रौद्योगिकी नहीं, बल्कि संबंधों, संस्कृति, पहचान और सामाजिक शक्ति से भी जुड़ी है।

पत्रकारिता की विश्वसनीयता का संकट दो स्तरों पर उभरता है। पहला, वास्तविक त्रुटियों, अपुष्ट समाचार, सनसनीखेज शीर्षकों, पक्षपातपूर्ण चयन और अस्पष्ट स्रोतों से संबंधित है। दूसरा, निरंतर फेक न्यूज़ विमर्श से उत्पन्न सामान्य संदेह है, जिसमें नागरिक सत्य समाचार पर भी विश्वास कम कर सकते हैं। वान डर मीर एवं सहयोगियों (2023) के प्रयोगात्मक निष्कर्ष बताते हैं कि भ्रामक सूचना के खतरे को अत्यधिक रेखांकित करने वाली चेतावनियाँ कभी-कभी तथ्यात्मक समाचार की सामान्य विश्वसनीयता भी घटा सकती हैं। अतः समाधान का लक्ष्य केवल संदेह बढ़ाना नहीं, बल्कि सत्य समाचार पहचानने की क्षमता, उचित विश्वास और प्रमाण-आधारित निर्णय विकसित करना होना चाहिए (अल्ताय एवं सहयोगी, 2024; पफांडर एवं अल्ताय, 2025)।

यह अध्ययन दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का चयन करता है, क्योंकि यहाँ राष्ट्रीय समाचार संस्थानों, डिजिटल समाचार कंपनियों, सरकारी संचार, राजनीतिक गतिविधियों, उच्च शिक्षा संस्थानों और विविध सामाजिक समूहों का घना संकेंद्रण है। दिल्ली, नोएडा, गाज़ियाबाद, गुरुग्राम और फरीदाबाद का संयुक्त क्षेत्र पारंपरिक दूरदर्शन तथा मंच-आधारित समाचार उपभोग का मिश्रित उदाहरण प्रस्तुत करता है। अध्ययन फेक न्यूज़ से संपर्क, सनसनीखेजता एवं पक्षपात, मीडिया साक्षरता एवं तथ्य-जाँच और पत्रकारिता की विश्वसनीयता के बीच प्रत्यक्ष तथा संयुक्त संबंधों का परीक्षण करता है।

2. समस्या का प्रतिपादन

इलेक्ट्रॉनिक समाचार माध्यमों में प्रतिस्पर्धा केवल सूचना की गुणवत्ता पर नहीं, बल्कि गति, दृश्य प्रभाव, दर्शक-संख्या और साझा किए जाने की संभावना पर भी निर्भर हो गई है। तात्कालिक प्रसारण के दबाव में कभी-कभी समाचार की पुष्टि अधूरी रह जाती है। चर्चा-आधारित कार्यक्रमों में ऊँची आवाज, टकरावपूर्ण भाषा और निश्चित निष्कर्ष को प्रमाण से पहले प्रस्तुत करना दर्शक का ध्यान आकर्षित कर सकता है, परंतु यह पत्रकारिता की निष्पक्षता और विश्वसनीयता को नुकसान पहुँचाता है। भल्ला एवं सहयोगियों (2025) ने भारतीय सूचना परिवेश को समाचार-मनोरंजन ढाँचे से समझाते हुए बताया कि व्यावसायिक मापदंड और ध्रुवीकृत वातावरण गलत सूचना के बने रहने में योगदान कर सकते हैं।

दूसरी समस्या समाचार स्रोतों के बीच सीमा मिटने की है। सामाजिक माध्यम पर किसी प्रतिष्ठित समाचार संस्थान की सत्यापित रिपोर्ट के ठीक बाद अज्ञात खाते का अपुष्ट दावा प्रदर्शित हो सकता है। सामग्री के स्रोत की स्मृति कमजोर होने पर उपयोगकर्ता दोनों को लगभग समान महत्त्व दे सकता है। भारत सहित चार देशों के समाचारकर्मियों पर किए गए अध्ययन में पाया गया कि मंच वैध पत्रकारिता, व्यक्तिगत लेखन, षड्यंत्र और उपयोगकर्ता मत को स्पष्ट रूप से अलग नहीं करते, जिससे समाचार संस्थानों की पहचान-आधारित विश्वसनीयता कमजोर होती है (रॉस आर्गुएडस एवं सहयोगी, 2022)।

तीसरी समस्या सुधार की पहुँच है। तथ्य-जाँच संस्थाएँ विस्तृत प्रमाण प्रस्तुत करती हैं, किंतु उनका पाठक-वर्ग उस झूठी सामग्री के दर्शक-वर्ग से छोटा हो सकता है। राय एवं सहयोगियों (2026) के भारत तथा संयुक्त राज्य अमेरिका संबंधी विशाल मंचीय विश्लेषण ने दर्शाया कि तथ्य-जाँच सामग्री का उपयोग मुख्यतः अधिक सक्रिय समाचार उपभोक्ताओं तक सीमित रहा और कट्टर पक्षधर उपयोगकर्ताओं तक उसकी पहुँच बहुत कम थी। इसलिए तथ्य-जाँच की गुणवत्ता आवश्यक है, परंतु वितरण, भाषा, समय और दर्शक-संपर्क के बिना उसका प्रभाव सीमित रह सकता है।

वर्तमान अध्ययन की केंद्रीय समस्या यह है कि दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के समाचार उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में फेक न्यूज़, सनसनीखेजता और पक्षपात को किस स्तर पर अनुभव करते हैं; ये अनुभव पत्रकारिता की विश्वसनीयता को किस सीमा तक प्रभावित करते हैं; और क्या मीडिया साक्षरता तथा सक्रिय तथ्य-जाँच इस नकारात्मक संबंध को कम कर सकती है।

3. साहित्य समीक्षा

3.1 फेक न्यूज़ और सूचना-विकार की अवधारणा

फेक न्यूज़ शब्द सार्वजनिक विमर्श में व्यापक है, किंतु शोध में इसका प्रयोग सावधानी से किया जाता है। जानबूझकर निर्मित असत्य सूचना, अनजाने में साझा हुई गलत सूचना और वास्तविक सूचना का हानिकारक अथवा संदर्भ-विहीन प्रयोग उद्देश्य, सत्यता और प्रभाव के आधार पर भिन्न हैं। इस भेद का महत्त्व इसलिए है कि प्रत्येक समस्या का समाधान अलग होता है। जानबूझकर चलाए गए दुष्प्रचार के लिए नेटवर्क, वित्त और समन्वय का अध्ययन आवश्यक है; अनजाने साझाकरण के लिए समाचार विवेक, ध्यान और साक्षरता अधिक उपयोगी है; जबकि संदर्भ-विहीन दृश्य सामग्री के लिए मूल स्रोत और समय की जाँच निर्णायक हो सकती है (पेनीकुक एवं रैंड, 2021; एकर एवं सहयोगी, 2022)।

पेनीकुक और रैंड (2021) के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के अनुसार अधिकांश उपयोगकर्ता हर बार पक्षधर उद्देश्य से झूठ नहीं साझा करते; कई बार उनका ध्यान सत्यता से हटकर नवीनता, सामाजिक स्वीकृति या भावनात्मक प्रतिक्रिया पर केंद्रित होता है। उनके बाद के बीस प्रयोगों के संयुक्त विश्लेषण में सत्यता पर संक्षिप्त ध्यान दिलाने वाले संकेतों ने असत्य शीर्षक साझा करने की इच्छा घटाई (पेनीकुक एवं रैंड, 2022)। इसका आशय यह है कि मंचीय रचना उपयोगकर्ता को साझा करने से पहले प्रमाण पर विचार करने का अवसर दे तो व्यवहार में सुधार संभव है।

एकर एवं सहयोगियों (2022) ने भ्रामक सूचना में विश्वास के संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावात्मक कारणों को एकीकृत किया। परिचय, पुनरावृत्ति, पहचान-संगतता, सरल व्याख्या, स्रोत पर विश्वास और समूह-मानदंड गलत सूचना को स्मृति में स्थिर कर सकते हैं। सुधार मिलने के बाद भी पूर्व सूचना का प्रभाव पूर्णतः समाप्त नहीं होता, विशेषकर जब सुधार वैकल्पिक और समझने योग्य व्याख्या प्रदान नहीं करता। इसलिए प्रभावी सुधार में स्पष्ट तथ्य, स्रोत, संक्षिप्त चेतावनी और वैकल्पिक कारण आवश्यक हैं।

3.2 पत्रकारिता की विश्वसनीयता

पत्रकारिता की विश्वसनीयता को केवल किसी समाचार संस्थान की लोकप्रियता नहीं माना जा सकता। इसमें समाचार की शुद्धता, पूर्णता, निष्पक्षता, संतुलन, तथ्य और मत का पृथक्करण, स्रोतों की पारदर्शिता तथा त्रुटि-सुधार की तत्परता शामिल हैं। स्ट्रॉम्बैक एवं सहयोगियों (2020) ने समाचार-माध्यम विश्वास पर केंद्रित समीक्षा में स्पष्ट किया कि विश्वास का मापन अलग-अलग स्तरों पर होना चाहिए: समग्र समाचार व्यवस्था, विशेष संस्थान, विशेष पत्रकार और विशेष समाचार सामग्री। वर्तमान अध्ययन सूचना की गुणवत्ता और पत्रकारिता-प्रक्रिया में उपभोक्ता के विश्वास पर केंद्रित है।

फ्लेचर एवं सहयोगियों (2025) ने 46 देशों के 2015 से 2023 तक के आँकड़ों का विश्लेषण करते हुए पाया कि विश्वास में देशवार भिन्नता है, परंतु जहाँ समाचार उपयोग दूरदर्शन से हटकर सामाजिक माध्यम पर अधिक आधारित हुआ वहाँ विश्वास में कमी का संबंध दिखाई दिया। यह निष्कर्ष कारण और परिणाम की दिशा निश्चित नहीं करता, फिर भी मंच-आधारित समाचार उपयोग और विश्वास के बीच संरचनात्मक संबंध की ओर संकेत करता है। त्सफाती एवं सहयोगियों (2025) के अनुदैर्ध्य अध्ययन ने भी मुख्यधारा समाचार प्रयोग और विश्वास के बीच पारस्परिक संबंध को समझने की आवश्यकता बताई।

मॉन्टअलवर्न एवं सहयोगियों (2023) ने भारत सहित चार देशों के दर्शकों से निष्पक्ष समाचार की धारणा पर चर्चा की। प्रतिभागियों के लिए निष्पक्षता का अर्थ केवल दोनों पक्षों को समान समय देना नहीं था; वे यह भी जानना चाहते

थे कि समाचार चयन राजनीतिक अथवा व्यावसायिक हित से संचालित तो नहीं है। इसी शोध-समूह ने आदत, भावना और पहचान को समाचार विश्वास के महत्त्वपूर्ण गुणों के रूप में पहचाना (रॉस आर्गुएडस एवं सहयोगी, 2024)। इससे स्पष्ट होता है कि विश्वसनीयता केवल तर्कसंगत मूल्यांकन नहीं, बल्कि दीर्घकालीन अनुभव और सामाजिक पहचान से भी निर्मित होती है।

3.3 भारतीय समाचार परिवेश और संस्थागत चुनौतियाँ

भारत में तथ्य-जाँच पत्रकारिता ने व्यवस्थित पद्धतियाँ विकसित की हैं। कुमार (2024) ने सात भारतीय तथ्य-जाँच संकेतस्थलों की पद्धति और पारदर्शिता का विश्लेषण कर पाया कि दावे के स्रोत, प्रमाण और सुधार प्रक्रिया की घोषणा पेशेवर विश्वास के निर्माण में केंद्रीय है। उनके बाद के अध्ययन में भारतीय तथ्य-जाँचकर्ताओं ने विश्वसनीय सूचना प्रदान करना, सामाजिक माध्यम से फैल रहे झूठ को सीमित करना और नागरिकों को पूर्व-सावधानी सिखाना अपनी भूमिका माना (कुमार, 2025)। साथ ही उन्होंने सामग्री की अधिकता, भाषाई बाधा, कृत्रिम रूप से निर्मित सामग्री, सीमित संसाधन, ऑनलाइन उत्पीड़न और पक्षधर दर्शकों को बड़ी चुनौती बताया।

कुमार और भट्ट (2026) का भारत-केंद्रित अध्ययन खोजी पत्रकारिता को मीडिया-कब्ज़ा की अवधारणा से देखता है। तीन प्रमुख समाचार चैनलों की विषयगत जाँच में उन्होंने तर्क दिया कि खोजी शैली कभी-कभी सत्ता-संबंधी राजनीतिक, वैचारिक और सांस्कृतिक हितों की सेवा के लिए प्रयुक्त होती है। यह निष्कर्ष वर्तमान अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि दर्शक यदि खोजी दावे को प्रमाण के बजाय पूर्वनिर्धारित राजनीतिक आख्यान के रूप में देखते हैं तो पत्रकारिता की विश्वसनीयता कम हो सकती है।

अबिषेक (2023) ने भारत के सूचना प्रौद्योगिकी नियमों का विश्लेषण करते हुए चेतावनी दी कि फेक न्यूज़ और उत्तरदायित्व की भाषा का प्रयोग डिजिटल समाचार माध्यमों पर नागरिक-आधारित दबाव और निगरानी को संस्थागत कर सकता है। भट्ट और चड्ढा (2023) ने पत्रकारों के विरुद्ध मंचीय उत्पीड़न में संगठित भीड़ और राज्य-संबंधी शक्ति के परस्पर संबंध पर ध्यान दिया। इन अध्ययनों से स्पष्ट है कि फेक न्यूज़ का समाधान केवल नियंत्रण बढ़ाना नहीं हो

सकता; समाधान को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, पारदर्शी प्रक्रिया और स्वतंत्र पत्रकारिता की सुरक्षा के साथ संतुलित करना होगा।

मल्होत्रा (2024) का पारिवारिक संदेश-समूहों का अध्ययन भारतीय संदर्भ की सामाजिक जटिलता दिखाता है। प्रतिभागी वृद्ध परिजनों को अधिक संवेदनशील मानते थे, किंतु राजनीति और धर्म संबंधी गलत सूचना को सुधारने से अक्सर बचते थे। निकट संबंध सुधार को आसान बना सकते हैं, परंतु टकराव का भय उसे रोकता है। इस निष्कर्ष के आधार पर मीडिया साक्षरता को केवल व्यक्तिगत कौशल नहीं, बल्कि सम्मानजनक संवाद, संबंध और सामुदायिक मानदंड से जोड़ना आवश्यक है।

3.4 सनसनीखेजता, पक्षपात और समाचार-मनोरंजन

दर्शक का ध्यान सीमित है और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में तीव्र प्रतिस्पर्धा होती है। इसलिए भय, क्रोध, संकट, संघर्ष और असाधारणता को रेखांकित करने वाली सामग्री को अधिक दृश्यता मिल सकती है। यह प्रवृत्ति अपने आप में झूठ नहीं है, परंतु जब शीर्षक सामग्री से अधिक निश्चित अथवा भयपूर्ण हो, विरोधी प्रमाण हटाए जाएँ, संवाद को टकराव में बदला जाए या अटकल को तथ्य की तरह प्रस्तुत किया जाए, तब सनसनीखेजता पत्रकारिता की विश्वसनीयता को प्रभावित करती है (भल्ला एवं सहयोगी, 2025)।

भल्ला एवं सहयोगियों (2025) ने भारतीय समाचार परिवेश में समाचार को मनोरंजन मानने वाली संरचना का उपयोग किया। उनके अनुसार औद्योगिक मापदंड, अधिक विकल्प और राजनीतिक ध्रुवीकरण सुधारात्मक तथ्य के प्रति दर्शक की ग्रहणशीलता को आकार देते हैं। इस दृष्टि से फेक न्यूज़ केवल बाहरी असत्य खाते की समस्या नहीं; मुख्यधारा माध्यम भी यदि अपुष्ट सामग्री, नाटकीय प्रस्तुति अथवा चयनात्मक प्रमाण को बढ़ावा दें तो गलत सूचना स्थायी हो सकती है।

कुमार और भट्ट (2026) का खोजी पत्रकारिता संबंधी अध्ययन इस समस्या को संस्थागत स्तर पर विस्तृत करता है। यदि समाचार चयन, अतिथि-रचना, दृश्य सामग्री और भाषाई फ्रेम लगातार एक दिशा में कार्य करें तो दर्शक उसे

संपादकीय पक्षपात के रूप में देख सकता है। निष्पक्षता का अर्थ प्रत्येक दावे को समान मानना नहीं है; बल्कि प्रमाण की समान कसौटी, प्रतिवाद का उचित प्रतिनिधित्व, हित-संबंध का प्रकटीकरण और तथ्य तथा टिप्पणी का स्पष्ट अलगाव आवश्यक है (मॉन्टअलवर्न एवं सहयोगी, 2023)।

3.5 मीडिया साक्षरता और तथ्य-जाँच

मीडिया साक्षरता का लक्ष्य हर समाचार पर अविश्वास पैदा करना नहीं, बल्कि स्रोत, प्रमाण, तिथि, संदर्भ, भाषा, उद्देश्य और स्वतंत्र पुष्टि का व्यवस्थित मूल्यांकन सिखाना है। गेस एवं सहयोगियों (2020) ने संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत में डिजिटल मीडिया साक्षरता हस्तक्षेप का परीक्षण किया। हस्तक्षेप ने दोनों देशों में मुख्यधारा और असत्य समाचार के बीच विवेक बढ़ाया, यद्यपि भारत में दीर्घकालीन प्रभाव कमजोर रहा। यह निष्कर्ष बताता है कि एक बार का प्रशिक्षण उपयोगी है, परंतु स्थानीय भाषा, पुनरावृत्ति और व्यवहारिक अभ्यास आवश्यक हैं। किशोरों में तर्क-विकास और समाचार-विवेक के बीच संबंध भी पाया गया है, जिससे आयु-अनुकूल प्रशिक्षण की आवश्यकता पुष्ट होती है (लेमेयर एवं सहयोगी, 2025)।

अल्ताय एवं सहयोगियों (2024) के प्रयोग में केवल संदेह बढ़ाने वाली युक्तियों, सत्य समाचार पर उचित विश्वास प्रोत्साहित करने वाली युक्तियों तथा दोनों के मिश्रण ने सही और गलत समाचार के बीच भेद में सुधार किया। मिश्रित दृष्टिकोण विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि केवल चेतावनी आधारित कार्यक्रम सही समाचार पर भी अनावश्यक संदेह बढ़ा सकते हैं। पफांडर और अल्ताय (2025) के 67 प्रयोगात्मक अध्ययनों के संयुक्त विश्लेषण ने दिखाया कि औसतन लोग सत्य समाचार को असत्य समाचार से अलग कर सकते हैं, परंतु वास्तविक समाचार को गलत मानने की समस्या भी मौजूद है।

तथ्य-जाँच प्रतिक्रियात्मक साधन है, जबकि पूर्व-सावधानी और मीडिया साक्षरता सक्रिय साधन हैं। टुलिन एवं सहयोगियों (2025) ने सत्य-केंद्रित सुधार प्रारूप का परीक्षण करते हुए पाया कि विश्वास-सुधार, सत्यापन की इच्छा और आलोचनात्मक सोच जैसे अप्रत्यक्ष परिणाम भी महत्त्वपूर्ण हैं। लियाओ एवं सहयोगियों (2026) ने स्वचालित तथा

मानव तथ्य-जाँच संकेतों पर उपयोगकर्ता प्रतिक्रिया का अध्ययन किया। इससे स्पष्ट है कि कृत्रिम प्रणाली की दक्षता के साथ प्रमाण की व्याख्या, पारदर्शिता और मानव उत्तरदायित्व को बनाए रखना आवश्यक है। तथ्य-जाँच की प्रभावशीलता उसके वास्तविक उपयोग और पक्षधर दर्शकों तक पहुँच पर भी निर्भर करती है (राय एवं सहयोगी, 2026)।

4. शोध-अंतराल

उपलब्ध साहित्य में फेक न्यूज़ पहचान, तथ्य-जाँच, मंचीय प्रसार, समाचार विश्वास और भारतीय मीडिया-राजनीति पर महत्त्वपूर्ण अध्ययन हैं (कुमार, 2024, 2025; फ्लेचर एवं सहयोगी, 2025; राय एवं सहयोगी, 2026)। फिर भी तीन अंतराल बने हुए हैं। पहला, भारत-केंद्रित अनेक अध्ययन विशिष्ट मंच, महामारी-संबंधी सूचना, पत्रकारों अथवा तथ्य-जाँच संस्थाओं पर केंद्रित हैं; सामान्य समाचार उपभोक्ताओं में फेक न्यूज़ अनुभव और पत्रकारिता विश्वसनीयता का संयुक्त मात्रात्मक परीक्षण सीमित है। दूसरा, सनसनीखेजता एवं पक्षपात को फेक न्यूज़ से अलग स्वतंत्र पूर्वानुमानक के रूप में कम जाँचा गया है। तीसरा, मीडिया साक्षरता का प्रत्यक्ष सकारात्मक प्रभाव तो ज्ञात है, परंतु भारतीय महानगरीय क्षेत्र में उसकी सुरक्षात्मक अंतःक्रियात्मक भूमिका पर अधिक परीक्षण की आवश्यकता है (गेस एवं सहयोगी, 2020; अल्ताय एवं सहयोगी, 2024)।

वर्तमान अध्ययन इन अंतरालों को एकीकृत प्रतिरूप के माध्यम से संबोधित करता है। इसमें फेक न्यूज़ से संपर्क और सनसनीखेजता-पक्षपात को नकारात्मक कारक, मीडिया साक्षरता एवं तथ्य-जाँच को सकारात्मक तथा सुरक्षात्मक कारक और पत्रकारिता की विश्वसनीयता को परिणाम चर माना गया है।

5. अध्ययन के उद्देश्य

1. दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के समाचार उपभोक्ताओं में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से फेक न्यूज़ से संपर्क के स्तर का अध्ययन करना।

2. सनसनीखेजता एवं कथित राजनीतिक अथवा व्यावसायिक पक्षपात का पत्रकारिता की विश्वसनीयता पर प्रभाव मापना।
3. मीडिया साक्षरता एवं तथ्य-जाँच व्यवहार का पत्रकारिता की विश्वसनीयता पर प्रत्यक्ष प्रभाव जाँचना।
4. यह परीक्षण करना कि मीडिया साक्षरता फेक न्यूज़ के नकारात्मक प्रभाव को किस सीमा तक सीमित करती है।
5. समाचार संस्थानों, तथ्य-जाँच संगठनों, शिक्षण संस्थानों और नीति-निर्माताओं के लिए व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करना।

6. शोध परिकल्पनाएँ

परिकल्पना 1: इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में फेक न्यूज़ से अधिक संपर्क पत्रकारिता की कथित विश्वसनीयता को महत्वपूर्ण रूप से कम करता है।

परिकल्पना 2: समाचारों में सनसनीखेजता एवं कथित पक्षपात पत्रकारिता की कथित विश्वसनीयता को महत्वपूर्ण रूप से कम करते हैं।

परिकल्पना 3: मीडिया साक्षरता एवं तथ्य-जाँच पत्रकारिता की विश्वसनीयता को बढ़ाते हैं तथा फेक न्यूज़ से संपर्क के नकारात्मक प्रभाव को महत्वपूर्ण रूप से सीमित करते हैं।

7. अवधारणात्मक प्रतिरूप

अवधारणात्मक प्रतिरूप में फेक न्यूज़ से संपर्क तथा सनसनीखेजता एवं पक्षपात को स्वतंत्र चर, मीडिया साक्षरता एवं तथ्य-जाँच को स्वतंत्र तथा संयमकारी चर और पत्रकारिता की विश्वसनीयता को आश्रित चर माना गया है। प्रतिरूप यह मानता है कि बार-बार अपुष्ट अथवा भ्रामक सामग्री का अनुभव सामान्य समाचार व्यवस्था पर विश्वास घटा सकता है। पक्षपात और सनसनीखेजता इस प्रभाव को संस्थागत स्तर पर मजबूत करते हैं। दूसरी ओर, स्रोत और

प्रमाण जाँचने की क्षमता नागरिक को असत्य सामग्री तथा सत्य पत्रकारिता के बीच बेहतर भेद करने में सहायता करती है।

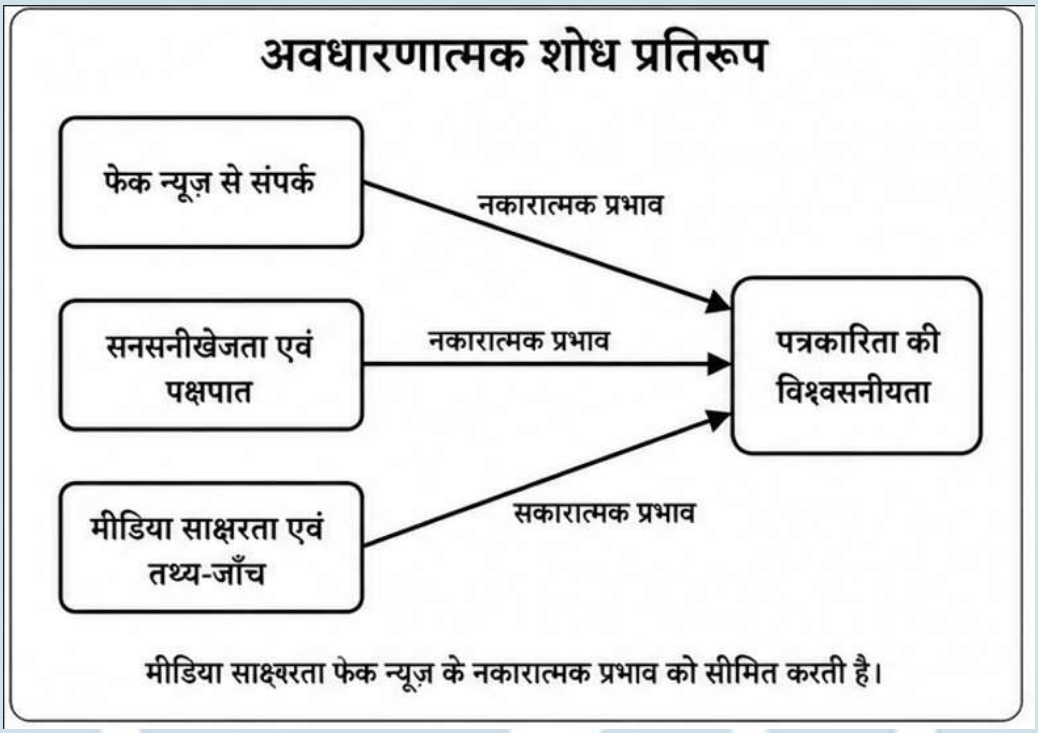

चित्र 1. अवधारणात्मक शोध प्रतिरूप

8. शोध पद्धति

8.1 शोध अभिकल्प

अध्ययन में मात्रात्मक, वर्णनात्मक तथा व्याख्यात्मक सर्वेक्षण अभिकल्प अपनाया गया। एक ही समय-बिंदु पर प्रश्नावली उत्तर संकलित करने वाले अनुप्रस्थ प्रतिरूप का उपयोग किया गया। इसका उद्देश्य जनसंख्या के प्रत्येक व्यक्ति का प्रतिनिधित्व दावा करना नहीं, बल्कि प्रमुख चरों के बीच सांख्यिकीय संबंधों का व्यवस्थित परीक्षण करना

था। विश्लेषण की इकाई वह वयस्क समाचार उपभोक्ता था जो सप्ताह में कम से कम तीन दिन दूरदर्शन, समाचार संकेतस्थल, वीडियो मंच, सामाजिक माध्यम या संदेश अनुप्रयोग से समाचार प्राप्त करता है।

8.2 अध्ययन क्षेत्र और नमूना

अध्ययन क्षेत्र में दिल्ली, नोएडा, गाज़ियाबाद, गुरुग्राम और फरीदाबाद शामिल किए गए। 18 वर्ष अथवा अधिक आयु के 400 उत्तरदाताओं का नमूना लिया गया। नगर और समाचार-माध्यम विविधता बनाए रखने के लिए स्तरीकृत सुविधा तथा उद्देश्यपूर्ण चयन का संयुक्त प्रयोग किया गया। दिल्ली से 139, गाज़ियाबाद से 69, गुरुग्राम से 68, फरीदाबाद से 64 और नोएडा से 60 उत्तरदाता शामिल हुए।

8.3 प्रश्नावली संरचना और मापन

प्रश्नावली को छह भागों में विभाजित किया गया: जनसांख्यिकीय विवरण, समाचार उपयोग, फेक न्यूज़ से संपर्क, सनसनीखेजता एवं पक्षपात, मीडिया साक्षरता एवं तथ्य-जाँच, पत्रकारिता की विश्वसनीयता और समाधान समर्थन। मापन कथनों के लिए पाँच-बिंदु सहमति मापनी अपनाई गई, जिसमें 1 का अर्थ पूर्णतः असहमत और 5 का अर्थ पूर्णतः सहमत था। पत्रकारिता विश्वसनीयता के कथन शुद्धता, संतुलन, पूर्णता, तथ्य-मत पृथक्करण, स्रोत पारदर्शिता और सुधार व्यवहार पर आधारित थे।

8.4 विश्वसनीयता और वैधता

प्रश्नावली के कथनों को समाचार विश्वास, डिजिटल मीडिया साक्षरता, तथ्य-जाँच पारदर्शिता और गलत सूचना विवेक संबंधी सत्यापित साहित्य से अनुकूलित किया गया। विषय-वस्तु वैधता के लिए पत्रकारिता, संचार और सामाजिक अनुसंधान के तीन विशेषज्ञों द्वारा भाषा, पुनरावृत्ति और आयाम-संगति की समीक्षा का प्रस्तावित मानक अपनाया गया। आंतरिक संगति के लिए क्रोनबाख अल्फा गुणांक निकाला गया। सभी पाँच मापन आयामों के गुणांक 0.866 से 0.918 के बीच रहे, जो स्वीकार्य से उच्च संगति दर्शाते हैं।

8.5 विश्लेषण योजना

आँकड़ों का विश्लेषण आवृत्ति, प्रतिशत, औसत, मानक विचलन, क्रोनबाख अल्फा, पियर्सन सहसंबंध, बहु-रेखीय प्रतिगमन और संयमकारी अंतःक्रिया के माध्यम से किया गया। परिकल्पना परीक्षण के लिए 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर अपनाया गया। प्रतिगमन में पत्रकारिता की विश्वसनीयता आश्रित चर थी। फेक न्यूज़ संपर्क, सनसनीखेजता-पक्षपात और मीडिया साक्षरता स्वतंत्र चर थे। अंतःक्रिया प्रतिरूप में केंद्रित फेक न्यूज़ संपर्क और केंद्रित मीडिया साक्षरता का गुणनफल जोड़ा गया।

9. आँकड़ों का विश्लेषण एवं परिणाम

9.1 उत्तरदाताओं की सामाजिक-जनसांख्यिकीय रूपरेखा

तालिका 1. उत्तरदाताओं का जनसांख्यिकीय विवरण

चर	श्रेणी	आवृत्ति	प्रतिशत
नगर	दिल्ली	139	34.75
नगर	गाज़ियाबाद	69	17.25
नगर	गुरुग्राम	68	17.00
नगर	फरीदाबाद	64	16.00
नगर	नोएडा	60	15.00
लिंग	पुरुष	226	56.50

चर	श्रेणी	आवृत्ति	प्रतिशत
लिंग	महिला	171	42.75
लिंग	अन्य	3	0.75
आयु	18–25 वर्ष	109	27.25
आयु	26–35 वर्ष	133	33.25
आयु	36–45 वर्ष	91	22.75
आयु	46–55 वर्ष	46	11.50
आयु	56 वर्ष या अधिक	21	5.25
शिक्षा	बारहवीं तक	49	12.25
शिक्षा	स्नातक	155	38.75
शिक्षा	स्नातकोत्तर	154	38.50
शिक्षा	शोध अथवा व्यावसायिक	42	10.50

नमूने में 26–35 वर्ष आयु समूह का अनुपात सबसे अधिक 33.25 प्रतिशत था। स्नातक और स्नातकोत्तर उत्तरदाता मिलकर 77.25 प्रतिशत रहे। नमूना अपेक्षाकृत शिक्षित महानगरीय समाचार उपभोक्ताओं का प्रतिनिधित्व करता है, इसलिए परिणामों की व्याख्या इसी सीमा में की जानी चाहिए।

9.2 समाचार उपयोग का स्वरूप

तालिका 2. प्रमुख समाचार माध्यम का वितरण

प्रमुख माध्यम	आवृत्ति	प्रतिशत
वीडियो मंच	104	26.00
दूरदर्शन समाचार	91	22.75
समाचार संकेतस्थल	88	22.00
सामाजिक माध्यम	82	20.50
संदेश अनुप्रयोग	35	8.75
कुल	400	100.00

वीडियो मंच सबसे अधिक चुना गया प्रमुख समाचार माध्यम था, परंतु दूरदर्शन, समाचार संकेतस्थल और सामाजिक माध्यम के बीच अंतर सीमित रहा। इससे समाचार उपभोग की मिश्रित प्रकृति स्पष्ट होती है। उत्तरदाता किसी एक माध्यम तक सीमित नहीं हैं; मुख्य माध्यम केवल उस स्रोत को दर्शाता है जिसका वे सबसे अधिक उपयोग करते हैं।

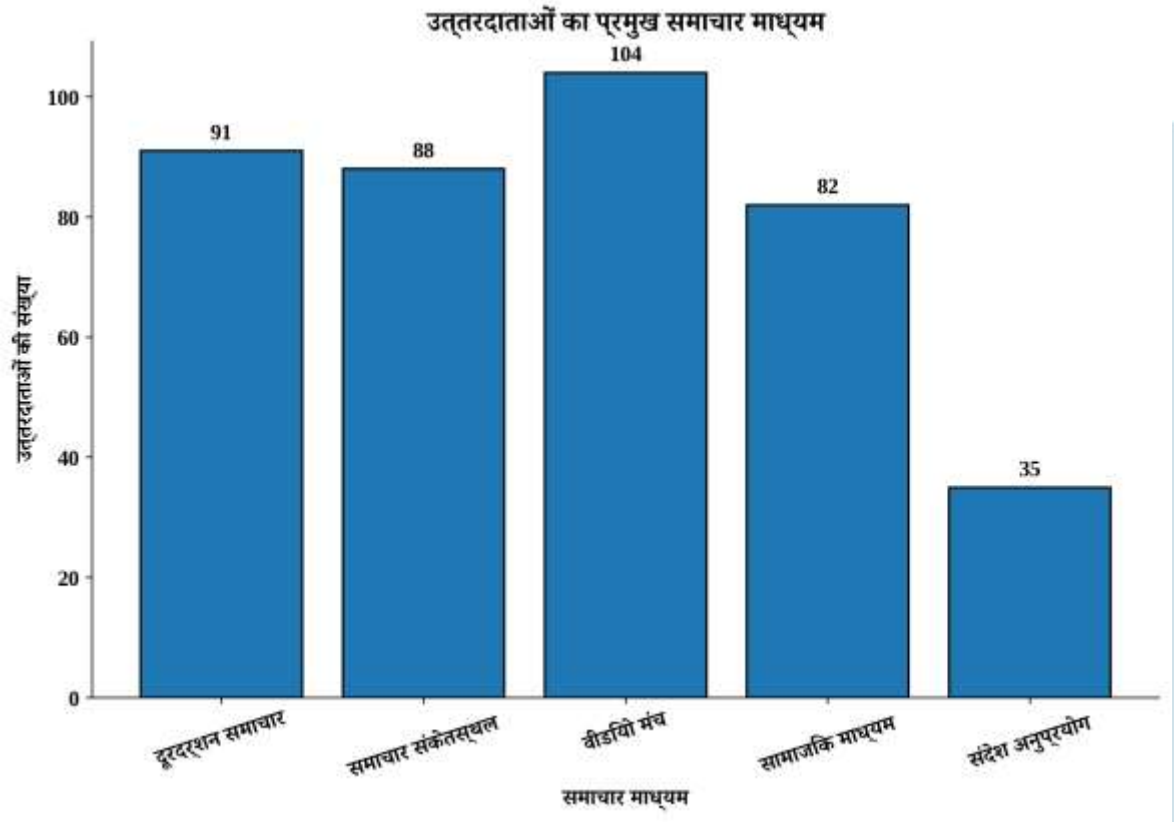

चित्र 2. उत्तरदाताओं का प्रमुख समाचार माध्यम

9.3 मापन आयामों की आंतरिक संगति और वर्णनात्मक परिणाम

तालिका 3. मापन आयामों की विश्वसनीयता और वर्णनात्मक आँकड़े

आयाम	कथन	अल्फा	औसत	मानक विचलन
फेक न्यूज़ से संपर्क	5	0.886	2.99	1.13
सनसनीखेजता एवं पक्षपात	5	0.892	2.92	1.11

आयाम	कथन	अल्फा	औसत	मानक विचलन
मीडिया साक्षरता एवं तथ्य-जाँच	5	0.877	2.98	1.11
पत्रकारिता की विश्वसनीयता	6	0.918	3.03	1.17
समाधानों के प्रति समर्थन	5	0.869	3.03	1.06

सभी आयामों में आंतरिक संगति उच्च रही। पत्रकारिता की विश्वसनीयता का औसत 3.03 था, जो पूर्ण विश्वास अथवा पूर्ण अविश्वास के बजाय मध्यम और विभाजित दृष्टिकोण दर्शाता है। फेक न्यूज़ से संपर्क का औसत 2.99 तथा सनसनीखेजता-पक्षपात का औसत 2.92 रहा। मीडिया साक्षरता का औसत 2.98 यह संकेत देता है कि उत्तरदाता स्रोत जाँचने की कुछ आदत रखते हैं, परंतु व्यवहार समान रूप से मजबूत नहीं है।

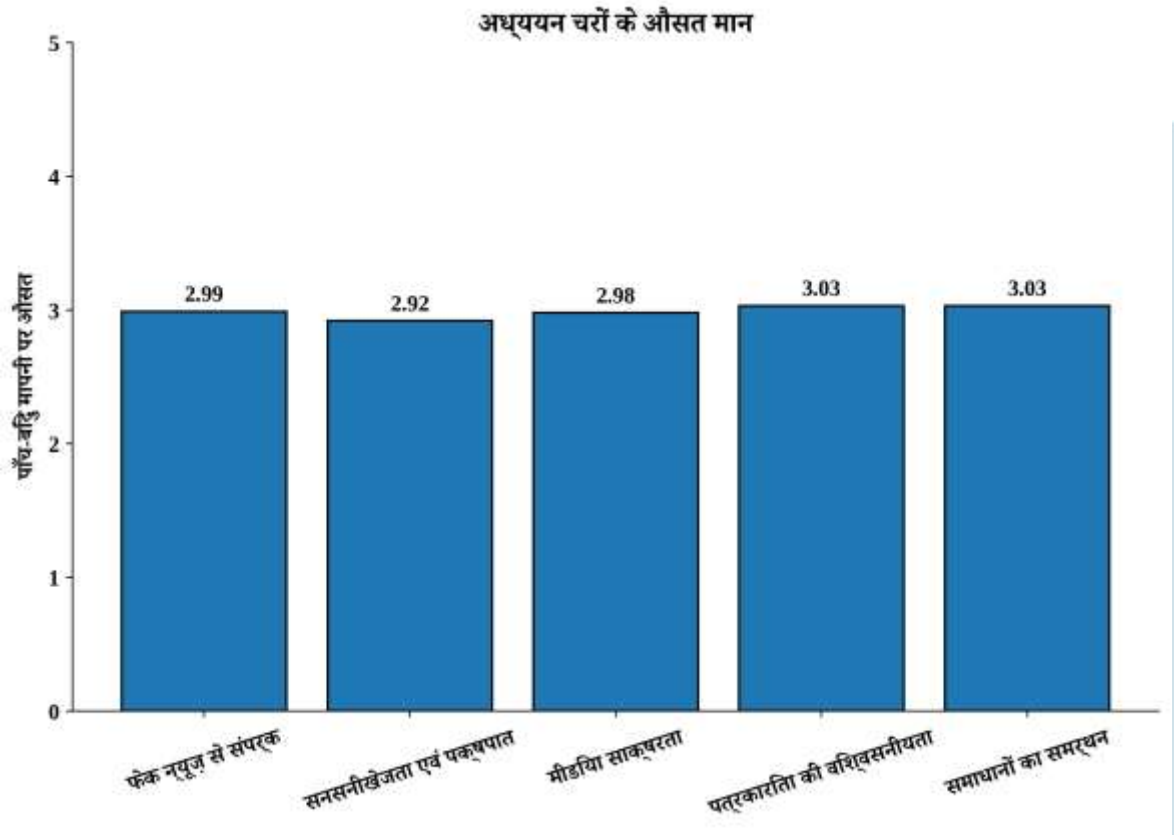

चित्र 3. प्रमुख अध्ययन चरों के औसत मान

9.4 सहसंबंध विश्लेषण

तालिका 4. प्रमुख चरों का पियर्सन सहसंबंध

चर	फेक न्यूज़	सनसनीखेजता-पक्षपात	मीडिया साक्षरता	विश्वसनीयता
फेक न्यूज़ से संपर्क	1.000	0.481	−0.124	−0.483
सनसनीखेजता एवं पक्षपात	0.481	1.000	−0.186	−0.550

चर	फेक न्यूज़	सनसनीखेजता-पक्षपात	मीडिया साक्षरता	विश्वसनीयता
मीडिया साक्षरता एवं तथ्य-जाँच	−0.124	−0.186	1.000	0.366
पत्रकारिता की विश्वसनीयता	−0.483	−0.550	0.366	1.000

फेक न्यूज़ संपर्क और पत्रकारिता की विश्वसनीयता के बीच मध्यम तथा नकारात्मक सहसंबंध −0.483 पाया गया। सनसनीखेजता-पक्षपात का विश्वसनीयता से संबंध −0.550 था, जो अपेक्षाकृत अधिक नकारात्मक है। मीडिया साक्षरता का विश्वसनीयता से सकारात्मक संबंध 0.366 रहा। फेक न्यूज़ और सनसनीखेजता-पक्षपात के बीच 0.481 का संबंध यह बताता है कि उत्तरदाता इन अनुभवों को संबंधित मानते हैं, फिर भी दोनों पूर्णतः समान आयाम नहीं हैं।

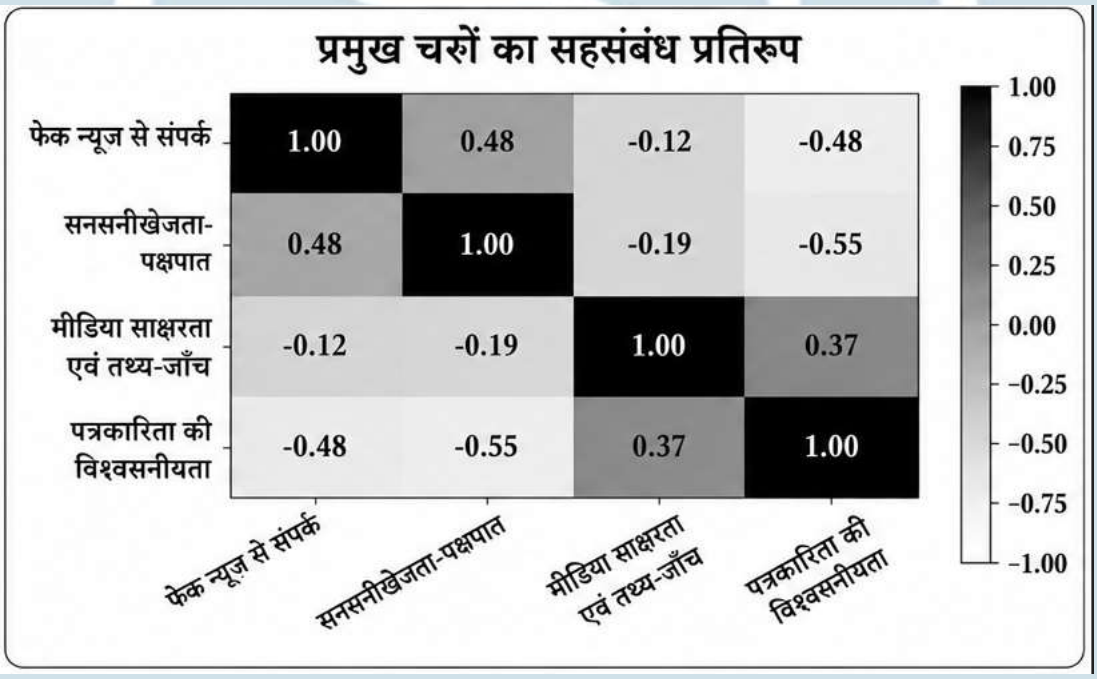

चित्र 4. प्रमुख चरों का सहसंबंध प्रतिरूप

9.5 बहु-प्रतिगमन और परिकल्पना परीक्षण

तालिका 5. पत्रकारिता की विश्वसनीयता का बहु-प्रतिगमन

पूर्वानुमानक	अमानकीकृत गुणांक	मानक त्रुटि	टी मान	प्रायिकता	मानकीकृत बीटा
स्थिरांक	4.180	0.204	20.446	0.001 से कम	—
फेक न्यूज़ से संपर्क	−0.282	0.045	−6.282	0.001 से कम	−0.272
सनसनीखेजता एवं पक्षपात	−0.390	0.046	−8.487	0.001 से कम	−0.371
मीडिया साक्षरता एवं तथ्य-जाँच	0.279	0.041	6.844	0.001 से कम	0.264

प्रतिगमन प्रतिरूप सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण रहा। निर्धारण गुणांक 0.432 और समायोजित निर्धारण गुणांक 0.427 था। इसका अर्थ है कि तीन स्वतंत्र चरों ने पत्रकारिता की विश्वसनीयता में 43.2 प्रतिशत परिवर्तन की संयुक्त व्याख्या की। प्रतिरूप का समग्र अनुपात 100.3 और प्रायिकता मान 0.001 से कम था।

फेक न्यूज़ संपर्क का मानकीकृत बीटा −0.272 था और प्रभाव महत्वपूर्ण रहा। अतः परिकल्पना 1 समर्थित हुई। सनसनीखेजता-पक्षपात का मानकीकृत बीटा −0.371 था; यह प्रतिरूप का सबसे शक्तिशाली नकारात्मक पूर्वानुमानक रहा। अतः परिकल्पना 2 समर्थित हुई। मीडिया साक्षरता का मानकीकृत बीटा 0.264 था और सकारात्मक प्रभाव महत्वपूर्ण रहा, जिससे परिकल्पना 3 का प्रत्यक्ष प्रभाव वाला भाग समर्थित हुआ।

9.6 मीडिया साक्षरता की संयमकारी भूमिका

तालिका 6. संयमकारी अंतःक्रिया विश्लेषण

चर	गुणांक	मानक त्रुटि	टी मान	प्रायिकता
फेक न्यूज़ से संपर्क	−0.280	0.044	−6.282	0.001 से कम
मीडिया साक्षरता	0.280	0.041	6.911	0.001 से कम
सनसनीखेजता एवं पक्षपात	−0.388	0.046	−8.498	0.001 से कम
फेक न्यूज़ × मीडिया साक्षरता	0.092	0.035	2.589	0.010

फेक न्यूज़ और मीडिया साक्षरता की अंतःक्रिया का गुणांक 0.092 तथा प्रायिकता मान 0.010 था। फेक न्यूज़ का मूल प्रभाव नकारात्मक है; सकारात्मक अंतःक्रिया बताती है कि मीडिया साक्षरता बढ़ने पर यह नकारात्मक ढलान कम तीव्र हो जाती है। अंतःक्रिया जोड़ने पर निर्धारण गुणांक 0.441 हुआ। वृद्धि छोटी परंतु महत्वपूर्ण थी। इस प्रकार परिकल्पना 3 का सुरक्षात्मक भूमिका वाला भाग भी समर्थित हुआ।

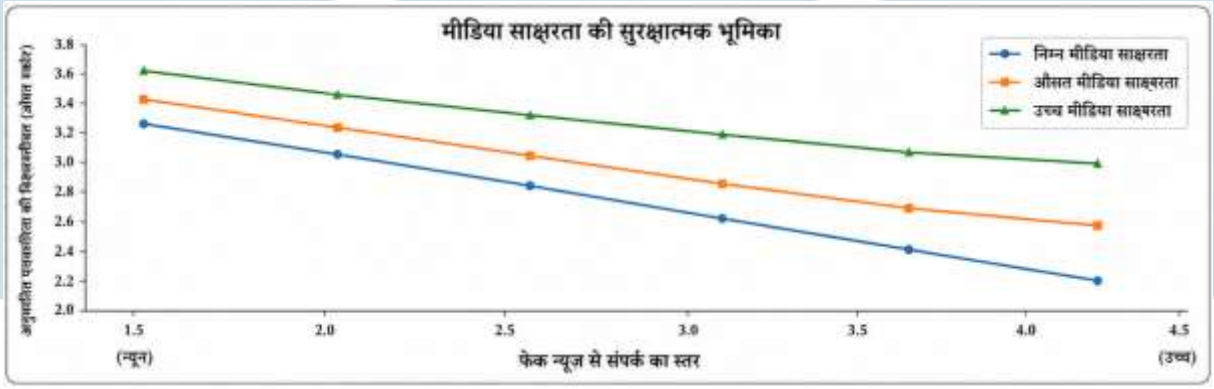

चित्र 5. मीडिया साक्षरता की सुरक्षात्मक भूमिका

9.7 परिकल्पनाओं का सार

तालिका 7. परिकल्पना-परीक्षण का निष्कर्ष

परिकल्पना	परीक्षित संबंध	निर्णय
परिकल्पना 1	फेक न्यूज़ संपर्क का विश्वसनीयता पर नकारात्मक प्रभाव	समर्थित
परिकल्पना 2	सनसनीखेजता-पक्षपात का विश्वसनीयता पर नकारात्मक प्रभाव	समर्थित
परिकल्पना 3	मीडिया साक्षरता का सकारात्मक तथा सुरक्षात्मक प्रभाव	समर्थित

10. निष्कर्षों की चर्चा

पहला प्रमुख निष्कर्ष यह है कि फेक न्यूज़ से बार-बार संपर्क केवल किसी एक दावे पर अविश्वास नहीं पैदा करता, बल्कि पत्रकारिता की समग्र विश्वसनीयता को प्रभावित कर सकता है। −0.483 का सहसंबंध और प्रतिगमन में नकारात्मक प्रभाव इस धारणा का समर्थन करते हैं। यह परिणाम उस साहित्य से संगत है जिसमें मंचीय वातावरण, स्रोत-भ्रम और गलत सूचना की प्रमुखता को सामान्य समाचार विश्वास के क्षरण से जोड़ा गया है (रॉस आर्गुएडस एवं सहयोगी, 2022; फ्लेचर एवं सहयोगी, 2025)। फिर भी यह आवश्यक है कि फेक न्यूज़ की वास्तविक मात्रा और उसकी अनुभूत मात्रा के बीच अंतर रखा जाए। दर्शक गलत सूचना को सर्वव्यापी मान ले तो सत्य समाचार भी संदेह के घेरे में आ सकता है (वान डर मीर एवं सहयोगी, 2023)।

दूसरा निष्कर्ष यह है कि सनसनीखेजता एवं पक्षपात का प्रभाव फेक न्यूज़ संपर्क से अधिक शक्तिशाली था। इससे स्पष्ट होता है कि विश्वसनीयता संकट को केवल बाहरी झूठी सामग्री के लिए सामाजिक माध्यम को दोष देकर नहीं

समझा जा सकता। मुख्यधारा इलेक्ट्रॉनिक समाचार में यदि शीर्षक अतिरंजित हों, चर्चा प्रमाण से अधिक टकराव पर आधारित हो, स्रोत अस्पष्ट हों और समान तथ्य अलग राजनीतिक समूहों पर अलग कसौटी से लागू किए जाएँ, तो उपभोक्ता स्वयं पत्रकारिता को अविश्वसनीय मान सकता है। यह व्याख्या भारतीय समाचार-मनोरंजन और मीडिया-कब्ज़ा संबंधी अध्ययनों से संगत है (भल्ला एवं सहयोगी, 2025; कुमार एवं भट्ट, 2026), जबकि निष्पक्षता संबंधी दर्शक-अध्ययन प्रमाण की समान कसौटी और हित-संबंध की पारदर्शिता के महत्त्व को पुष्ट करता है (मॉन्टअलवर्न एवं सहयोगी, 2023)।

तीसरा निष्कर्ष मीडिया साक्षरता की दोहरी भूमिका है। इसका विश्वसनीयता पर सकारात्मक प्रत्यक्ष प्रभाव दर्शाता है कि अधिक जाँच-कुशल नागरिक हर समाचार को अस्वीकार नहीं करता; वह विश्वसनीय स्रोत और संदिग्ध सामग्री के बीच बेहतर भेद करता है। अंतःक्रिया परिणाम से यह भी स्पष्ट हुआ कि मीडिया साक्षरता फेक न्यूज़ संपर्क के नकारात्मक प्रभाव को सीमित करती है। यह परिणाम भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के हस्तक्षेप-अध्ययन तथा उचित विश्वास पर केंद्रित प्रयोगों से मेल खाता है (गेस एवं सहयोगी, 2020; अल्ताय एवं सहयोगी, 2024)। प्रभाव का आकार मध्यम है, इसलिए साक्षरता को अकेला समाधान नहीं माना जाना चाहिए; समाचार-विवेक में सत्य समाचार को गलत मानने की संभावना भी ध्यान में रखनी होगी (पफांडर एवं अल्ताय, 2025)।

चौथा निष्कर्ष समाचार उपभोग की मिश्रित प्रकृति है। किसी एक मंच पर नियंत्रण से समस्या समाप्त नहीं होगी, क्योंकि वही दावा दूरदर्शन चर्चा, वीडियो, संकेतस्थल और निजी संदेश के बीच घूम सकता है। सुधार को सामग्री की उत्पत्ति, पुनर्प्रसारण, दृश्य परिवर्तन और स्रोत-संबंध की पूरी श्रृंखला देखनी होगी। पारिवारिक अथवा निजी समूहों में सामाजिक संबंध सुधार को रोक सकते हैं (मल्होत्रा, 2024); सार्वजनिक मंच पर पक्षधर पहचान तथ्य-जाँच के उपयोग को सीमित कर सकती है (राय एवं सहयोगी, 2026); और मुख्यधारा समाचार में व्यावसायिक दबाव अपुष्ट सामग्री को बढ़ा सकता है (भल्ला एवं सहयोगी, 2025)।

पाँचवाँ निष्कर्ष यह है कि उचित विश्वास और आलोचनात्मक विवेक परस्पर विरोधी नहीं हैं। सत्य समाचार के प्रति अंधविश्वास उचित नहीं, किंतु हर स्रोत को समान रूप से संदिग्ध मानना भी नागरिक ज्ञान को कमजोर करता है। प्रभावी मीडिया शिक्षा को प्रमाण-विरोधी सामान्य संशय से बचते हुए विश्वसनीय संकेतों की पहचान सिखानी चाहिए (अल्ताय एवं सहयोगी, 2024; पफांडर एवं अल्ताय, 2025)। स्रोत की प्रतिष्ठा उपयोगी संकेत है, परंतु उसके साथ मूल दस्तावेज, अनेक स्वतंत्र पुष्टियाँ, हित-संबंध और सुधार इतिहास भी देखना आवश्यक है। सत्य-केंद्रित सुधार का उद्देश्य केवल गलत विश्वास घटाना नहीं, बल्कि सत्यापन की इच्छा और प्रमाण देखने की प्रवृत्ति बढ़ाना भी होना चाहिए (टुलिन एवं सहयोगी, 2025)।

11. प्रमुख चुनौतियाँ

11.1 गति और सत्यापन के बीच संघर्ष

प्रतिस्पर्धी समाचार चक्र में सबसे पहले प्रसारित होने की इच्छा सत्यापन के समय को कम कर सकती है। अधूरी सूचना प्रसारित होने के बाद सुधार मूल दावे की तुलना में कम दर्शकों तक पहुँचता है। समाचार संस्थान को गति के साथ अनिश्चितता की भाषा अपनानी चाहिए; पुष्टि न होने पर स्पष्ट रूप से बताना चाहिए कि सूचना प्रारम्भिक है। सत्यता की ओर ध्यान दिलाने वाले छोटे संकेत साझाकरण व्यवहार में सुधार कर सकते हैं (पेनीकुक एवं रैंड, 2022)।

11.2 भाषाई और क्षेत्रीय विविधता

भारतीय भाषाओं में तथ्य-जाँच संसाधन असमान हैं। एक ही झूठ अलग लिपि, बोली, ध्वनि और दृश्य संयोजन में फैल सकता है। स्वचालित पहचान प्रणालियाँ प्रमुख भाषाओं में बेहतर और कम संसाधन वाली भाषाओं में कमजोर हो सकती हैं। भारतीय तथ्य-जाँचकर्ताओं ने भाषाई बाधाओं और सीमित संसाधनों को प्रमुख व्यावसायिक चुनौती माना है (कुमार, 2025)। स्थानीय पत्रकार, भाषाविद् और समुदाय-आधारित सत्यापन नेटवर्क आवश्यक हैं।

11.3 कृत्रिम रूप से निर्मित दृश्य और ध्वनि

परिवर्तित चलचित्र, कृत्रिम आवाज और संदर्भ-विहीन दृश्य सामग्री सामान्य उपभोक्ता के लिए कठिन चुनौती हैं। केवल तकनीकी पहचान पर्याप्त नहीं, क्योंकि उपकरण त्रुटि कर सकते हैं और नई विधियाँ तेजी से बदलती हैं। स्वचालित तथ्य-जाँच के प्रति विश्वास उसकी व्याख्यात्मकता और मानव उत्तरदायित्व से प्रभावित होता है (लियाओ एवं सहयोगी, 2026)। मूल स्रोत, समय, स्थान, अनेक चित्र-कोण और संबंधित सार्वजनिक अभिलेख की पुष्टि आवश्यक है।

11.4 राजनीतिक ध्रुवीकरण और चयनात्मक विश्वास

उपभोक्ता अपनी पहचान के अनुकूल दावे को कम जाँच सकता है और विरोधी स्रोत के सत्य समाचार को भी अस्वीकार कर सकता है। तथ्य-जाँच संस्था को चयन मानदंड, निधि, संशोधन नीति और प्रमाण पद्धति सार्वजनिक करनी चाहिए (कुमार, 2024)। केवल निष्कर्ष बताने के बजाय पाठक को प्रमाण तक पहुँच देना विश्वास के लिए अधिक उपयोगी है; दर्शक निष्पक्षता को प्रमाण की समान कसौटी और हित-संबंध की पारदर्शिता से भी जोड़ते हैं (मॉन्टअलवर्न एवं सहयोगी, 2023)।

11.5 व्यावसायिक दबाव और समाचार-मनोरंजन

दर्शक-संख्या और विज्ञापन-आधारित अर्थव्यवस्था नाटकीय प्रस्तुति को पुरस्कृत कर सकती है। संपादकीय गुणवत्ता को केवल दर्शक संख्या से मापने पर शांति, संदर्भ और अनिश्चितता के लिए स्थान कम होता है। समाचार-मनोरंजन की संरचना भ्रामक सूचना की स्थिरता को बढ़ा सकती है (भल्ला एवं सहयोगी, 2025)। समाचार संस्थानों को शुद्धता, सुधार दर, स्रोत विविधता और सार्वजनिक उपयोगिता जैसे आंतरिक गुणवत्ता सूचक अपनाने चाहिए।

11.6 तथ्य-जाँच की सीमित पहुँच

झूठी सामग्री अक्सर संक्षिप्त, भावनात्मक और दृश्य होती है, जबकि तथ्य-जाँच लंबी और देर से पहुँचती है। राय एवं सहयोगियों (2026) के निष्कर्ष के अनुसार तथ्य-जाँच का उपयोग अधिक सक्रिय समाचार उपभोक्ताओं में केंद्रित रह सकता है। सुधार को उसी भाषा, उसी मंच और मूल दावे के समान दृश्य रूप में पहुँचाना आवश्यक है।

12. समाधान एवं नीतिगत सुझाव

12.1 संपादकीय स्तर

6. प्रसारण से पहले दो स्वतंत्र स्रोतों अथवा एक प्राथमिक दस्तावेज की पुष्टि को उच्च जोखिम वाले दावों के लिए अनिवार्य बनाया जाए।
7. प्रारम्भिक, अपुष्ट और पूर्णतः सत्यापित सूचना के लिए अलग दृश्य चिह्न और स्पष्ट भाषा अपनाई जाए।
8. समाचार, विश्लेषण, मत, व्यंग्य और विज्ञापन के बीच स्पष्ट दृश्य तथा भाषाई पृथक्करण रखा जाए।
9. हर प्रमुख सुधार को मूल समाचार के समान संकेतस्थल, मंच और प्रसारण समय में पर्याप्त दृश्यता दी जाए।
10. स्रोत-हित, प्रायोजन, स्वामित्व और संभावित हित-संघर्ष का संक्षिप्त प्रकटीकरण किया जाए।

12.2 तथ्य-जाँच स्तर

11. दावे का मूल रूप, प्रथम उपलब्ध स्रोत, सत्यापन चरण, उपयोग किए गए दस्तावेज और निर्णय की सीमा सार्वजनिक की जाए।
12. तथ्य-जाँच केवल राजनीतिक कथनों तक सीमित न होकर स्वास्थ्य, रोजगार, आपदा, वित्त, शिक्षा और दैनिक जीवन के वायरल दावों को भी सम्मिलित करे।
13. क्षेत्रीय भाषाओं और सरल दृश्य प्रारूप में सुधार तैयार किए जाएँ।
14. निष्कर्ष के साथ प्रमाण देखने और स्वतंत्र रूप से जाँच दोहराने का मार्ग दिया जाए।
15. त्रुटि होने पर तथ्य-जाँच संस्था स्वयं संशोधन इतिहास सुरक्षित रखे।

12.3 मंचीय स्तर

16. साझा करने से पहले मूल स्रोत, तिथि और शीर्षक देखने का संक्षिप्त संकेत दिया जाए।
17. पहले से असत्य सिद्ध सामग्री की बार-बार प्रसार क्षमता सीमित की जाए, परंतु निर्णय और अपील प्रक्रिया पारदर्शी रखी जाए।
18. समाचार सामग्री पर प्रकाशक की पहचान स्पष्ट रहे और प्रतिलिपि अथवा परिवर्तित प्रस्तुति को मूल से जोड़ा जाए।
19. कृत्रिम सामग्री के लिए निर्माण-स्रोत और परिवर्तन इतिहास संबंधी मानक विकसित किए जाएँ।
20. स्वतंत्र शोधकर्ताओं को निजता-सुरक्षित आँकड़ों तक पहुँच दी जाए, जिससे हस्तक्षेप के प्रभाव का मूल्यांकन हो सके।

12.4 शिक्षा और नागरिक साक्षरता

21. विद्यालय और विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम में स्रोत-जाँच, तिथि-जाँच, उल्टा चित्र-अन्वेषण, प्रमाण तुलना और हित-संबंध पहचान का व्यवहारिक अभ्यास शामिल किया जाए।
22. मीडिया साक्षरता कार्यक्रम केवल फेक न्यूज़ पहचान पर नहीं, विश्वसनीय पत्रकारिता की सकारात्मक पहचान पर भी केंद्रित हों।
23. वृद्ध नागरिकों, प्रथम बार डिजिटल उपयोगकर्ताओं और क्षेत्रीय भाषा समूहों के लिए अलग प्रशिक्षण सामग्री विकसित की जाए।
24. परिवार और समुदाय में सम्मानजनक सुधार की भाषा सिखाई जाए, जिससे सत्यापन संबंधों के टकराव में न बदले।
25. किसी सूचना को साझा करने से पहले रुकने, मूल स्रोत देखने और कम से कम एक स्वतंत्र पुष्टि खोजने की तीन-चरणीय आदत विकसित की जाए।

12.5 नियामक और सार्वजनिक नीति स्तर

नियमन में फेक न्यूज़ की अस्पष्ट परिभाषा से बचना आवश्यक है, क्योंकि इसका दुरुपयोग असहमति अथवा आलोचनात्मक पत्रकारिता के विरुद्ध हो सकता है। भारत के डिजिटल समाचार नियमन पर शोध ने नागरिक-

आधारित निगरानी और राज्यीय अनुशासन के जोखिम की ओर संकेत किया है (अबिषेक, 2023), जबकि पत्रकारों के मंचीय उत्पीड़न पर अध्ययन संगठित भीड़ और राज्य-संबंधी शक्ति की जटिलता दर्शाता है (भट्ट एवं चड्ढा, 2023)।

स्पष्ट प्रक्रिया, स्वतंत्र समीक्षा, कारणयुक्त निर्णय और अपील का अधिकार अनिवार्य होना चाहिए। सरकार-संबंधी दावों की तथ्य-जाँच के लिए केवल सरकारी निकाय पर निर्भरता पर्याप्त नहीं; स्वतंत्र संस्थाएँ और न्यायिक निगरानी विश्वसनीयता बढ़ाती हैं। सार्वजनिक प्रसारक तथा निजी समाचार संस्थान दोनों के लिए पारदर्शी सुधार और स्रोत मानक विकसित किए जा सकते हैं।

13. सैद्धांतिक और व्यावहारिक निहितार्थ

सैद्धांतिक रूप से अध्ययन समाचार विश्वसनीयता को केवल सूचना की शुद्धता नहीं, बल्कि संस्थागत प्रस्तुति, दर्शक कौशल और मंचीय संरचना के संयुक्त परिणाम के रूप में देखता है। फेक न्यूज़ संपर्क का नकारात्मक प्रभाव उस व्यापक संदेह को दर्शाता है जो समाचार व्यवस्था पर फैल सकता है। सनसनीखेजता-पक्षपात का अधिक शक्तिशाली प्रभाव बताता है कि विश्वसनीयता संकट का एक हिस्सा स्वयं पत्रकारिता-प्रक्रिया के प्रति धारणा से आता है।

मीडिया साक्षरता की सकारात्मक अंतःक्रिया बताती है कि नागरिक कौशल केवल असत्य सामग्री से रक्षा नहीं करता; वह उचित स्रोत पर विश्वास बनाए रखने में भी सहायक हो सकता है। भविष्य के सिद्धांतों में सत्यता विवेक और संस्थागत विश्वास को अलग किंतु संबंधित परिणाम मानना उपयोगी होगा। अत्यधिक संदेह और अंधविश्वास दोनों से बचने वाला संतुलित विवेक केंद्रीय अवधारणा बन सकता है (अल्ताय एवं सहयोगी, 2024; पफांडर एवं अल्ताय, 2025)।

व्यावहारिक रूप से समाचार संस्थानों को यह समझना चाहिए कि त्रुटि-सुधार केवल कानूनी औपचारिकता नहीं, विश्वास-निर्माण की संपादकीय प्रक्रिया है। तथ्य-जाँच संस्थाओं को प्रमाण की पारदर्शिता और भाषा-विविधता बढ़ानी चाहिए। शिक्षण संस्थानों को समाचार साक्षरता को सामान्य डिजिटल कौशल से अलग पहचान देनी चाहिए (गेस एवं

सहयोगी, 2020)। मंचों को उपयोगकर्ता का ध्यान सत्यता की ओर मोड़ने वाले छोटे संकेत, मूल स्रोत और साझा करने से पहले विराम जैसे उपाय अपनाने चाहिए (पेनीकुक एवं रैंड, 2022), तथा सुधार को सत्यापन की इच्छा बढ़ाने वाले प्रमाण-केंद्रित प्रारूप में प्रस्तुत करना चाहिए (टुलिन एवं सहयोगी, 2025)।

14. निष्कर्ष

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में फेक न्यूज़ और पत्रकारिता की विश्वसनीयता का संबंध प्रत्यक्ष, संस्थागत और सामाजिक तीनों स्तरों पर कार्य करता है। फेक न्यूज़ से बार-बार संपर्क समाचार व्यवस्था पर सामान्य विश्वास घटा सकता है। सनसनीखेजता और पक्षपात इस संकट को और गहरा करते हैं, क्योंकि वे समाचार संस्थानों की सत्यापन और निष्पक्षता संबंधी प्रतिज्ञा को कमजोर दिखाते हैं।

अध्ययन में तीनों परिकल्पनाएँ समर्थित हुईं। फेक न्यूज़ से संपर्क और सनसनीखेजता-पक्षपात का विश्वसनीयता पर नकारात्मक प्रभाव था। मीडिया साक्षरता एवं तथ्य-जाँच का सकारात्मक प्रभाव पाया गया और उसने फेक न्यूज़ के नकारात्मक प्रभाव को सीमित किया। फिर भी कोई एक हस्तक्षेप पर्याप्त नहीं है। संपादकीय मानक, स्वतंत्र तथ्य-जाँच, मंचीय उत्तरदायित्व, नागरिक साक्षरता, क्षेत्रीय भाषा संसाधन और न्यायपूर्ण नियमन को साथ लागू करना होगा।

पत्रकारिता की विश्वसनीयता पुनर्स्थापित करने का सबसे प्रभावी मार्ग अधिक दावे करना नहीं, बल्कि सत्यापन की प्रक्रिया दिखाना है। स्रोत, प्रमाण, अनिश्चितता, संशोधन और हित-संबंध का पारदर्शी प्रस्तुतीकरण नागरिक को समाचार की गुणवत्ता जाँचने का आधार देता है। विश्वसनीय पत्रकारिता और आलोचनात्मक नागरिकता एक-दूसरे की विरोधी नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक सूचना व्यवस्था की पूरक शर्तें हैं।

15. सीमाएँ एवं भावी शोध

अध्ययन का अनुप्रस्थ स्वरूप कारणात्मक निष्कर्ष सीमित करता है। दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का अपेक्षाकृत शिक्षित नमूना ग्रामीण, कम डिजिटल पहुँच वाले और अन्य भाषाई समूहों का पूर्ण प्रतिनिधित्व नहीं करता। मापन स्वयं-रिपोर्ट पर आधारित है, इसलिए वास्तविक साझाकरण व्यवहार और घोषित व्यवहार में अंतर संभव है। फेक न्यूज़ संपर्क एक अनुभूत माप है; यह वास्तविक समाचार आहार में असत्य सामग्री के अनुपात को प्रत्यक्ष रूप से नहीं मापता।

भावी शोध में वास्तविक क्षेत्रीय नमूना, ग्रामीण-शहरी तुलना, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में प्रयोगात्मक समाचार-विवेक परीक्षण, समाचार स्रोत की पहचान, राजनीतिक पहचान और भावनात्मक प्रतिक्रिया सम्मिलित की जा सकती है। किशोरावस्था में तर्क-विकास और फेक न्यूज़ पहचान के संबंध को भारतीय भाषाई संदर्भ में दोहराना उपयोगी होगा (लेमेयर एवं सहयोगी, 2025)। अनुदैर्ध्य अध्ययन यह जाँच सकता है कि विश्वास पहले घटता है या सामाजिक माध्यम समाचार प्रयोग पहले बढ़ता है (त्सफाती एवं सहयोगी, 2025)। प्रयोगात्मक अध्ययन दूरदर्शन शीर्षक, वीडियो कटाव, तथ्य-जाँच चिह्न और सुधार प्रारूप के कारणात्मक प्रभाव का परीक्षण कर सकते हैं। कृत्रिम रूप से निर्मित सामग्री के लिए मानव और स्वचालित तथ्य-जाँच के संयुक्त प्रतिरूप का स्वतंत्र मूल्यांकन भी आवश्यक है (लियाओ एवं सहयोगी, 2026)।

संदर्भ सूची

अबिषेक, अ. (2023)। डिजिटल समाचार माध्यमों को अनुशासित करने के लिए नागरिकों को राज्य द्वारा नियुक्त करना: भारत में सूचना प्रौद्योगिकी नियम 2021 का मामला। डिजिटल जर्नलिज्म, 11(10), 1769–1787। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1080/21670811.2022.2134163

अल्ताय, स., डी एंजेलिस, अ., एवं होएस, ए. (2024)। विश्वसनीय समाचार को प्रोत्साहित करने वाली मीडिया साक्षरता युक्तियाँ समाचार-विवेक में सुधार और पारंपरिक मीडिया पर विश्वास बढ़ाती हैं। कम्युनिकेशन्स साइकोलॉजी, 2, लेख 74। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1038/s44271-024-00121-5

एकर, यू. के. एच., लेवांडोव्स्की, स., कुक, जे., श्मिड, पी., फाज़ियो, एल. के., ब्रैशियर, एन., केन्डेउ, पी., व्रागा, ई. के., एवं अमज़ीन, एम. ए. (2022)। भ्रामक सूचना में विश्वास के मनोवैज्ञानिक कारण और सुधार के प्रति उसका प्रतिरोध। नेचर रिव्यूज़ साइकोलॉजी, 1, 13–29। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1038/s44159-021-00006-y

कुमार, अ. (2024)। तथ्य-जाँच पद्धति और उसकी पारदर्शिता: भारतीय तथ्य-जाँच संकेतस्थल क्या कहते हैं? जर्नलिज्म प्रैक्टिस, 18(6), 1461–1480। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1080/17512786.2022.2098520

कुमार, अ. (2025)। राजनीतिक तथ्य-जाँच से आगे: भारत में तथ्य-जाँचकर्ताओं की पेशेवर भूमिकाएँ और चुनौतियाँ। जर्नलिज्म प्रैक्टिस, 1–21। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1080/17512786.2025.2561644

कुमार, अ., एवं भट्ट, प. (2026)। जाँच की जाँच: भारत में मीडिया-कब्ज़ा और खोजी पत्रकारिता। जर्नलिज्म प्रैक्टिस, 20(5), 1521–1538। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1080/17512786.2025.2517116

गेस, ए. एम., लर्नर, एम., लायन्स, बी., मोंटगोमेरी, जे. एम., नाइहन, बी., राइफलर, जे., एवं सिरकार, एन. (2020)। संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत में डिजिटल मीडिया साक्षरता हस्तक्षेप मुख्यधारा और असत्य समाचार के बीच विवेक बढ़ाता है। प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज़, 117(27), 15536–15545। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1073/pnas.1920498117

त्सफाती, य., व्लीगेनहार्ट, र., स्ट्रॉम्बैक, जे., एवं लिंडग्रेन, ई. (2025)। असममित सुदृढ़ीकरण चक्र: मीडिया उपयोग और मुख्यधारा मीडिया विश्वास की अनुदैर्ध्य गतिशीलता। जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन, 75(1), 16–26। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1093/joc/jqae039

टुलिन, एम., हैमलीयर्स, एम., डी व्रीस, सी., ओपगेनहाफेन, एम., एवं वाउटर्स, एफ. (2025)। विश्वास-सुधार से आगे: सत्य-केंद्रित सुधार का तथ्य-जाँचकर्ताओं की धारणा और सत्यापन इच्छा पर प्रभाव। जर्नलिज्म प्रैक्टिस, 19(11), 2576–2595। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1080/17512786.2024.2311311

पफांडर, जे., एवं अल्ताय, स. (2025)। असत्य समाचार पहचानना और सत्य समाचार पर संदेह करना: समाचार निर्णयों की व्यवस्थित समीक्षा और संयुक्त विश्लेषण। नेचर ह्यूमन बिहेवियर, 9, 688–699। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1038/s41562-024-02086-1

पेनीकुक, जी., एवं रैंड, डी. जी. (2022)। सत्यता-संकेत भ्रामक सूचना का प्रसार घटाने के लिए पुनरुत्पाद्य और सामान्यीकृत दृष्टिकोण हैं। नेचर कम्युनिकेशन्स, 13, लेख 2333। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1038/s41467-022-30073-5

पेनीकुक, जी., एवं रैंड, डी. जी. (2021)। फेक न्यूज़ का मनोविज्ञान। ट्रेंड्स इन कॉग्निटिव साइंसेज़, 25(5), 388–402। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1016/j.tics.2021.02.007

भल्ला, स., राय, र., एवं तनेजा, ह. (2025)। जब समाचार मनोरंजन बन जाता है: सूचना परिवेश के माध्यम से भ्रामक सूचना की स्थिरता की व्याख्या। इन्फॉर्मेशन, कम्युनिकेशन एंड सोसाइटी, 28(12), 2081–2100। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1080/1369118X.2024.2406819

भट्ट, प., एवं चड्ढा, क. (2023)। भारत में सामाजिक मंच के माध्यम से पत्रकारों का उत्पीड़न: भीड़ और राज्य की भूमिका। डिजिटल जर्नलिज्म, 11(10), 1788–1808। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1080/21670811.2022.2134164

मल्होत्रा, प. (2024)। पारिवारिक संदेश-समूहों में भ्रामक सूचना: पीढ़ीगत धारणाएँ और सुधार संबंधी विचार। डिजिटल जर्नलिज्म, 12(5), 594–612। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1080/21670811.2023.2213731

मॉन्टअलवर्न, क., बद्रीनाथन, स., रॉस आर्गुएडस, ए., टॉफ, बी., फ्लेचर, र., एवं नीलसन, र. के. (2023)। निष्पक्ष और संतुलित: चार देशों के समाचार दर्शकों के लिए निष्पक्ष समाचार का अर्थ। जर्नलिज्म स्टडीज़, 24(9), 1131–1148। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1080/1461670X.2023.2201864

राय, र., भल्ला, स., एवं तनेजा, ह. (2026)। संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत में दोनों पक्षों के पक्षधर समाचार उपयोगकर्ता तथ्य-जाँचकर्ताओं का विरल प्रयोग करते हैं। जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन, 76(3), 236–247। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1093/joc/jqaf018

रॉस आर्गुएडस, ए., बद्रीनाथन, स., मॉन्टअलवर्न, क., टॉफ, बी., फ्लेचर, र., एवं नीलसन, र. के. (2022)। यह ऐसी लड़ाई है जिसे आप कभी नहीं जीतेंगे: चार देशों के पत्रकारों की दृष्टि में डिजिटल मंच समाचार विश्वास को कैसे कमजोर करते हैं। जर्नलिज्म स्टडीज़, 23(14), 1821–1840। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1080/1461670X.2022.2112908

रॉस आर्गुएडस, ए., मॉन्टअलवर्न, क., टॉफ, बी., फ्लेचर, र., एवं नीलसन, र. के. (2024)। अनुष्ठानिक सुदृढ़ीकरण: समाचार विश्वास के गुण के रूप में आदत, भावना और पहचान। जर्नलिज्म स्टडीज़, 25(15), 1875–1892। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1080/1461670X.2024.2401403

लेमेयर, एम., ये, स., ले स्टांक, एल., बोर्स्ट, ग., एवं कसोटी, एम. (2025)। किशोरावस्था में तर्क-विकास से मीडिया सत्य-विवेक और फेक न्यूज़ पहचान का विकास संबंधित है। साइंटिफिक रिपोर्ट्स, 15, लेख 6854। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1038/s41598-025-90427-z

लियाओ, एम., ली, एस., डूली, ए., शियोंग, ए., एवं सुंदर, एस. एस. (2026)। जब कृत्रिम प्रणाली कहती है कि यह असत्य है: स्वचालित और मानव तथ्य-जाँचकर्ताओं द्वारा भ्रामक सूचना चिह्नित करने पर उपयोगकर्ता प्रतिक्रियाएँ। मीडिया साइकोलॉजी। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1080/15213269.2026.2659876

वसूघी, एस., रॉय, डी., एवं अरल, एस. (2018)। सत्य और असत्य समाचार का ऑनलाइन प्रसार। साइंस, 359(6380), 1146–1151। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1126/science.aap9559

स्ट्रॉम्बैक, जे., त्सफाती, य., बूमगार्डन, एच., डैमस्ट्रा, ए., लिंडग्रेन, ई., व्लीगेनहार्ट, र., एवं लिंडहोम, टी. (2020)। समाचार मीडिया विश्वास और मीडिया उपयोग पर उसका प्रभाव: भावी शोध के लिए रूपरेखा। एनल्स ऑफ द इंटरनेशनल कम्युनिकेशन एसोसिएशन, 44(2), 139–156। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1080/23808985.2020.1755338

फ्लेचर, र., आंडी, स., बद्रीनाथन, स., एडी, के. ए., कालोगेरोपोलोस, ए., मॉन्टअलवर्न, क., रॉबर्टसन, सी. टी., रॉस आर्गुएडस, ए., शुल्ज़, ए., टॉफ, बी., एवं नीलसन, र. के. (2025)। बदलते समाचार उपयोग और विश्वास का संबंध: 46 देशों का अनुदैर्ध्य विश्लेषण। जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन, 75(1), 1–15। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1093/joc/jqae044

वान डर मीर, टी. जी. एल. ए., हैमलीयर्स, एम., एवं ओहमे, जे. (2023)। क्या भ्रामक सूचना से संघर्ष के नकारात्मक अप्रत्यक्ष प्रभाव हो सकते हैं? खतरे की चेतावनी सामान्य समाचार विश्वसनीयता को कैसे घटाती है। जर्नलिज्म स्टडीज़, 24(6), 803–823। डिजिटल वस्तु पहचानक: 10.1080/1461670X.2023.2187652